eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

प्राथमिक शिक्षा, शिक्षक और बच्चें

[1]विवेक मिश्रा
[1]**प्रधानाध्यापक,** प्रा0वि0 सिरकौली कुर्मिन रामनगर, बाराबंकी

Received: 10 July 2022, Accepted: 20 July 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 July 2022

Abstract

शिक्षा किसी भी समाज में निरंतर चलने वाली सामजिक प्रक्रिया है। देश की शिक्षा व्यवस्था को वर्तमान परिस्थितियों और भाविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तित करने की जरूरत समय समय पर होती है। इसी परिवर्तनवादी और सुधारवादी दृष्टि का मूर्तिमान रूप है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 संपूर्ण भारत के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का आना बहुत ही हर्ष और गौरव का विषय है। किसी भी उद्देश्य या कार्य को सफलतापूर्वक और प्रभावपूर्ण तरीके से पूर्ण करने के लिए तालमेल के साथ कार्य करने की आवश्यकता होती है। इस नई राह पर चलकर उन्नति की ओर एक साथ बढ़ने के लिए सभी को कर्मठ और आशावान होना चाहिए। बच्चें राष्ट्र की संपत्ति है, धरोहर है।

एक शिक्षक का ध्येय बच्चों का चरित्र निर्माण करना तथा ऐसे मूल्यों को रोपना होना चाहिए। बच्चे शिक्षक के बहुत नजदीक होते है। एक शिक्षक अपने बच्चों के लिए रोल मॉडल होता है। बच्चा पहली बार जब घर से निकलकर प्राथमिक विद्यालय आता है तो शिक्षक की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। एक अच्छा शिक्षक, छात्र के जीवन में एक अभिन्न भूमिका निभाता है। समर्थन प्रदान करता है, ज्ञान और कौशल विकसित करता है। जिज्ञासा और रचनात्मकता पैदा करता है। शिक्षक छात्रों को उनके शैक्षणिक लक्ष्यों तक पहुचनें और दूसरो के साथ स्वस्थ संबंध बनाने के लिए मार्गदर्शन करते है। हमारे जीवन में माता–पिता से ऊपर गुरू को दर्जा दिया गया है क्योकि एक शिक्षक ही है जो एक बच्चें के भविष्य को बनाता है।

Keywords:- देश की शिक्षा व्यवस्था, प्राथमिक शिक्षा, शिक्षक और बच्चे।

Introduction

प्राथमिक शिक्षा में विशेष रूप से विद्यार्थियों द्वारा शिक्षकों को प्रेरणा स्त्रोत के रूप में देखा जाता है। प्राइवेट विद्यालयो में बच्चों को उनके माता–पिता नहलाकर, तैयार करके बैग लगाकर बच्चों को विद्यालय भेजने जाते है। शाम को विद्यालय में क्या पढ़ाया गया? क्या होमवर्क है सभी चीजों पर ध्यान देता है। कभी–कभी बच्चों को पढ़ाने के लिए अलग से ट्यूशन की व्यवस्था करते है। लेकिन सरकारी विद्यालयों में एक बच्चे के लिए अध्यापक ही सब कुछ है। बच्चें अपने अध्यापक के सबसे ज्यादा नजदीक होते है। शिक्षक से संबन्धित उनकी धारणाएँ विद्यार्थियों के शैक्षिक अनुभवों पर प्रतिबिंबित होती है। इसलिए शिक्षकों के प्रति विद्यार्थियों की धारणा किसी शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण होती है। औपचारिक शिक्षा के मूल और आवश्यक तत्वों में से एक महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक माना जाता है। वह अपने बच्चों को विशिष्ट ज्ञान और कौशल सिरवाता है। और साथ ही उनके दृष्टिकोण और

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

व्यवहार को आकार भी देता है। एक विद्यार्थी के लिए शिक्षकों का व्यवहार और व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है। शिक्षक अपने व्यक्तिगत लक्षणों जैसें बोल चाल, कपड़े, मित्रतापूर्वक व्यवहार, समय से विद्यालय जाना, चीजों की आलोचना करना, आक्रामक या शांत होना आदि द्वारा बच्चों को प्रभवित करता है। प्राथमिक विद्यालय का शिक्षक विद्यालय के पाठ्यक्रम में विषयों पर जानकारी देता हुआ बच्चों को रचनात्मकता, सीखने की तत्परता की ओर उन्मुख करता है। सक्षम शिक्षक, विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है। इसके साथ ही उन्हें दूसरों के साथ प्रभावी संचार के लिए कौशल विकसित करने में मदद करता है। इसके साथ ही उन्हें दूसरों के साथ प्रभावी संचार के लिए कौशल विकसित करने में सक्षम बनाता है। ऐसा शिक्षक बच्चे के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक होता है। प्राथमिक विद्यालया के शिक्षक बच्चों के व्यक्तित्व विकास, व्यवहार के पैटर्न और किसी भी दृष्टिकोण पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। कई बार तो ऐसा होता है– घर पर या अन्य किसी जगह जब बच्चों से कोई कहता है कि ''ये सही नहीं है या ऐसा नहीं करो तो बच्चे निर्भीक होकर बोल देते हैं कि ये सही है। सर जी ने ऐसा ही बताया है'' मैं यही करूंगा।''

शैक्षिक प्रक्रिया की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए विद्यार्थी अपने शिक्षकों के साथ कैसा अनुभव करते हैं या उसके प्रति उनकी धारणा क्या है? इस पर भी शिक्षकों को ध्यान देना चाहिए। एक शिक्षक को अपने बच्चों के सामने कभी भी ऐसा कोई काम या गलत आचरण न करना चाहिए जो बच्चों के मन मस्तिष्क पर गलत प्रभाव डालें। प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक की सकारात्मक धारणा विकसित होने पर बच्चों को अधिक सकारात्मक भावनाओं के साथ अपनी शिक्षा जारी रखने में सक्षम कर सकती है। शिक्षक ज्ञान संचारित करने के अलावा विद्यार्थियों के व्यवहार को भी प्रभावित करते हैं। व्यक्तियों की आंतरिक शक्ति और दूसरों के साथ प्रभावी संचार के निर्माण की क्षमता उनकी प्राथमिक शिक्षा की सफलता पर निर्भर करती है। भारत में 34 वर्षों पश्चात् आई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत (F.L.N.) मूलभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान पर विशेष बल दिया गया है। शिक्षा नीति के अनुसार 2025 तक नेशनल मिशन के माध्यम से फाउण्डेशन लिटरेशी और न्यूमरेसी कौशल प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। 10+2 की जगह राष्ट्रीय शिक्षा नीति में की 5+3+3+4 की अवधारणा दी गई है। 3 से 8 साल की उम्र के लिए बुनियादी चरण का सुझाव दिया गया है। इसमें प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (E.C.C.E) को मजबूत आधार माना जा रहा है। इसमें बहुस्तरीय खेल गतिविधि आधारित सीखनें पर बल दिया जाएगा।

8 से 11 साल के बच्चे प्रारम्भिक चरण में आते हैं यह चरण खेल, केन्द्रित खोज और गतिविधि पर आधारित और परस्पर संवाद सीखने के लिए होगा। बच्चों को समुचित शिक्षा देने के साथ–साथ अध्यापकों को इस चीज का भी ध्यान रखना चाहिए जिससे बच्चों पर कोई सामाजिक मानसिक दबाव न पड़े। वह भय के वातावरण में न रहे। इसीलिए सरकार ने बाल अधिकार का प्रावधान किया है– **अनुच्छेद 28**–के अनुसार सभी बच्चों को शिक्षा पाने का अधिकार है। प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क होनी चाहिए।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

अनुच्छेद 29–शिक्षा ऐसी हों जो आपके व्यक्तिगत व प्रतिभा को उतनी विकसित करें जितनी संभव है। यह आपको अपने माता पिता, अपनी तथा अन्य संस्कृतियों का आदर करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अनुच्छेद 26–

1. प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा का अधिकार है। शिक्षा कम से कम प्रारम्भिक और बुनियादी अवस्थाओं में निःशुल्क होगी। प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य होगी।
2. शिक्षा का उद्देश्य होगा मानव व्यक्तित्व का पूर्ण विकास।

बाल अधिकारों में न केवल शिक्षा की बात की गई है। बल्कि जीवन की गुणवत्ता की भी चर्चा की गई है। विनोबा भावे का कथन था–मैं मानता हूँ कि तालीम का ऐसा तरीका अख्तियार करना चाहिए जिसमें की लड़कों की प्रज्ञा स्वयंभू बने और वे स्वतन्त्र विचारक बनें। विद्या की तरफ इस दृष्टि से देखना कि विद्या पाकर नौकरी मिल सकती है। यह बिल्कुल गलत है। विद्या एक मौलिक वस्तु है। जिसे सच्ची शिक्षा हासिल होती है, वह सच्चे अर्थों में मुक्त और स्वतन्त्र होता है। (चोलकर–विनोबा विचार–दोहर पृष्ठ 111) हर बच्चा अद्वितीय है और प्रत्येक बच्चे की अभिरुचि पर ध्यान देने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों की अभिरुचि के अनुसार उन्हें पढ़ाई का मौका मिलेगा। बच्चों के लिए विद्यालय जाना मनोरंजन के साथ–साथ खेल आधारित होगा और बच्चों के अनुकूल होगा। 3 से 6 आयु वर्ग के बच्चों के लिए आंगनवाड़ी के माध्यम से मुफ्त, सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक बाल्यावस्था, देखभाल और शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित करना है।

वैज्ञानिक डा0 कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता वाली समिति द्वारा तैयार किए गए राष्ट्रीय शिक्षा नीति में प्राथमिक स्तर पर त्रिभाषा के फार्मूले को अपनाने की बात की गई है। बच्चा जन्म से ही बाहरी दुनिया से मातृभाषा में संवाद करता है। इसी कारण मातृ भाषा में संवाद करता है। इसी कारण मातृ भाषा पर मस्तिष्क की सक्रीयता अन्य किसी माध्यम से अधिक प्रभावशाली होती है। इसी कारण नई शिक्षा नीति में मातृभाषा पर जोर दिया गया है। शिक्षा के क्षेत्र में विकास राष्ट्र के लिए सबसे अहम विकास होता है। शिक्षा के क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा नई एजुकेशन पालिसी लांच की गई थी। जिसके अन्तर्गत शिक्षा के क्षेत्र में काफी बदलाव किए गए। इन्हीं प्रयासों के चलते सरकार द्वारा निपुण भारत योजना की शुरूआत की गई है, जिसके माध्यम से आधारभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता के ज्ञान को छात्रों तक पहुंचाना ही इस योजना का लक्ष्य है। निपुण भारत योजना को शिक्षा मंत्रालय द्वारा 5 जुलाई, 2021 को आरम्भ किया गया ह। इस योजना का पूरा नाम **नेशनल इनीशिएटिव फार प्रोफिशिएंसी इन रिडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एण्ड न्यूमेरेसी** है। निपुण भारत मिशन के माध्यम से सक्षम वातावरण का निर्माण किया जाएगा। यह मिशन स्कूली शिक्षा कार्यक्रम समग्र शिक्षा का एक हिस्सा होगी। इसी के अन्तर्गत बालवाटिका (आयु 5 से 6 वर्ष) का भी संचालन किया जाएगा। बालवाटिका में बच्चों के प्रारम्भिक मस्तिष्क तथा बाल विकास हेतु नीव रखने का कार्य किया जाता है। जिसमें तरह–तरह के खेल को खेलकर पढ़ने लिखने तथा संख्याओं को समक्ष की शिक्षा दी जाती है। नई शिक्षा नीति के अनुसार राज्य सरकारें भी अपने राज्य के विद्यालयों में बालवाटिका का संचालन करेगी। शुरू के दो साल बच्चे आंगनवाड़ी में रहेंगे। उसके बाद एक साल बालवाटिका में पढ़ेंगे। एक

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 02, July 2022

शिक्षक को चाहिए कि वो बच्चों के चारों ओर मुद्रण समृद्ध परिवेश का निर्माण करे, जिसमें बच्चे अपनी–अपनी रुचियों के अनुसार कार्य करने के लिए स्वतन्त्र अनुभव करें।

- पुस्तकों को ढूंढने और संभालने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें।
- ढेर सारी ध्वनि विभेदीकरण की गतिविधियां कराए। जैसे मेरा नाम व से शुरू होता है, किसके नाम से पहले र आता है।

प्रारम्भिक लेखन प्रयासों के लिए आप मूविंग चॉक बोर्ड चुम्बकीय बोर्ड, स्लेट, वर्णमाला, चार्ट का प्रयोग कर सकते हैं ये सभी सामग्री बच्चों की पहुंच में रखना चाहिए। विद्यालय में बच्चों के उपयोगी बाल कहानी, रंगीन चित्र मुक्त किताबें रखना चाहिए। छोटे बच्चों में कल्पना शक्ति बड़ी प्रबल होती है। साथ ही कल्पना और यथार्थ में विशेष अन्तर नहीं कर पाता। इस कारण बाल साहित्य ऐसा होना चाहिए जो एक ओर उसे काल्पनाशील बनाए रखे तथा दूसरी ओर वह यथार्थ से बहुत दूर चला न जाए। बच्चों को समय–समय पर खेल भी खिलाना चाहिए। जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके। बच्चे राष्ट्र की सम्पत्ति हैं, धरोहर हैं लेकिन गहराई से विश्लेषण करने पर पता चलता है कि राष्ट्र निर्माण और उसकी उन्नति के कर्णधार बच्चे ही हैं जो कुछ वर्षों बाद राष्ट्र के युवा हो जाएंगे। इसलिए शिक्षक की भूमिका किसी भी राष्ट्र के लिए और महत्वपूर्ण हो जाती है। इस प्रकार कक्षा में शिक्षकों को विद्यार्थियों के लिए रोल मॉडल होना चाहिए और अपने ज्ञान और व्यक्तित्व के साथ उनका मार्गदर्शन करना चाहिए। एक शिक्षक का उद्देश्य होना चाहिए–

''हमें बच्चे को डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, शिक्षक बनाने से पहले उन्हें अच्छा नागरिक बनाना है।''

सन्दर्भ सूचीः–

- भारत सरकार 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
- निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009
- प्राथमिक शिक्षक पत्रिका NCERT
- राष्ट्रीय पोषण नीति 1993